Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue. 7, Aug 2012
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

समकालीन महिला कहानीकारो की कहानियों में नारी चेतना

गिरधर लाल षर्मा

श्री गुरु जम्भेष्वर आदर्ष बी.एड कॉलेज
रावतसर, जिलाः– हनुमानगढ़ (राजस्थान)

षोध–लेख सार

आज का युग प्रत्येक क्षेत्र में जागरण का युग है नारी आज वह नहीं रह गई है जो कि पचास वर्श पहले थी कालान्तर में उसके जीवन व्यवहार और सोचने में तौर तरीको में भारी अंतर आया है। नारी चेतना का अर्थ यह नहीं है। कि उसे पारिवारिक बंधनो से मुक्त होना है और अपने दायित्वो से मुंह मोड़कर स्वच्छ जीवन बिताना है अपितु उसे अपनी भावनाओ की अभिव्यक्ति के लिए पूर्ण रुप से जागरुक होना है। उसे रुढ़ियो उसे रुढियों परम्पराओ की गुलामी के लिए जोर जबरदस्ती न करनी पड़े,उसे अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए पुरुश की भातिं ही सुविधा और अवसर प्राप्त हो, उसकी और मानवीय दृश्टि से देखा जाए पुरुश नारी के साथ आत्मीयता का छलावा कर अमानवीय व्यवहार करना अपना धर्म समझता चला आ रहा है किन्तु अब चेतना के स्वर बदले है और नारी ने अपने अस्तित्व के अर्थ को समझा है और इसने संकल्प लिया है कि सबको मानवता का अर्थ समझाना है।

मुख्य–शब्दः– नारी चेतना, समाज सुधारक, संस्कृति, वैदिक काल

मानव जाति की सभ्यता संस्कृति के विकास का मूल आधार नारी है।नारी ने हमारी संस्कृति,धर्म एवं सभ्यता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आदिकाल से वर्तमान समय तक नारी चिंतन पर बहस हो रही है और आज भी जारी है। एक तरफ तो उसकी पूजा देवी रुप में की जाती है और दूसरी तरफ उसे मात्र भोग की वस्तु समझा गया है और हमेशा की तरह वह सिर्फ एक अनुभझी पहेली बन कर रह जाती है परन्तु वास्तव में नारी केवल नारी है,मानवी है वह हमेंशा से ही अपनी पहचान व्यक्ति रुप में पाना चाहती है। परन्तु हमारे भारतीय समाज में सभी संस्कृतियों के केन्द्र में पुरुश रहा धर्म संस्कृति एवं सभ्यता के केन्द्र में पुरुश रहा धर्म संस्कृति एवं सभ्यता के केन्द्र में पुरुश को ही रखा गया और स़्त्री उसकी सहायक मात्र ही रही।

डॉ. मृणाल पाण्डे के अनुसार समाज में स्त्रीत्व की मूल अवधारणा नकारात्मक है। लगभग सभी धार्मिक और दार्शनिक दायरे में स्त्री को पुरुश के संदर्भ में एक अपूर्ण और सापेक्ष जीवन के रुप में देखा गया है।

पुरुश ने नारी को कभी सम्मानपूर्वक नजरों से नहीं देखा। वैदिक काल में नारी शिक्षित और स्वतंत्र थी और सभी कार्यो में उसका सहभाग था समाज में से गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था उतर वैदिक काल से उसकी अवनति प्रारंभ हुई उसका दायरा सीमित हो गया वह चारदीवारी के भीतर कैद कर दी गई। उपनिशद काल मे उसकी स्थिति में और गिरावट आ गई मध्यकाल तक आते आते तो उसकी सुरक्षा के नाम पर उसे इतने बंधनो से जकड़ दिया कि उसके स्वतंत्र अस्तित्व का नामोनिशान नहीं रहा।

आधुनिक काल में आकर नारी में नई चेतना का संचार हुआ परिवर्तन की प्रक्रिया शुरु हुई। अनेक समाज सुधारको ने नारी जीवन में सुधार के लिए प्रयत्न किए और नारी मुक्ति की भावना विकसित हुई। शिक्षा के कारण नारी अधिक जाग्रत हुई उसने अपने अधिकारो को समझा तथा आर्थिक रुप से स्वावलम्बन बनी नारी चेतना का प्रसार हुआ।

आज समाज में जो भी परिवर्तन हो रहे है उसका प्रभाव व्यक्ति के मन पर पड़ता है और व्यक्ति के मन में हो रहे उतार चढ़ाव साहित्य के माध्यम से ही व्यक्त होते है। साहित्य के क्षेत्र मे अब महिलाओ की उपस्थिति को कोई अनदेखा नहीं कर सकता।

हिन्दी कथा साहित्य के प्रारंभ में नारी कथाकारो के लिए सम्मान व करुणाजनक रही और रुढिवादी परम्परावादी साहित्यकारो ने उसके हर नये कदम की भर्त्सना की किन्तु स्वातंत्रोतर काल में साहित्यकारो की धारणा में परिवर्तन हुआ रुढ़ियो और सामाजिक बंधनो के बोझ से निश्प्राण होती नारी ने जब करवट लेकर आंखे खोली और अपने पैरो पर खड़े होकर नई राहों की तलाश की तब साहित्यकारो को भी उसके पीछे चलने के लिए विवश होना पड़ा तथा उन्हे इस दायित्व का बोध हुआ कि समाज के आधे भाग का यदि इसी प्रकार निश्प्राण होने दिया गया तो देश की प्रगति अधूरी ही नहीं बल्कि अवरुद्वभी हो सकती है। इसलिए नारी जीवन की विशमताओ को इस दृश्टि से चित्रित किया, जिससे उसे समाज का समर्थन और सराहना मिल सके तथा नारी को स्वयं अपनी सामर्थ्य का बोध हो सके।

इस दायित्व को सर्वाधिक महिला कथाकारो ने वहन किया अब तक नारी को नारी मन से नही देखा गया था, पुरुश कथाकार अपनी ही दृश्टि से नारी मन को कल्पित करके गढ़ी हुई रचनाएं लिख रहा था, किंतु नारी की समस्याओ के चित्रण में उसके जीवन के अभावो और आवश्यकताओ को मुक्त ह्रदय से व्यक्त किया है।

स्त्रियों की मानसिक गुलामी सामाजिक गतिरोध नारी जीवन के तनाव और संघर्श आदि तत्वो पर लेखिकाएँ अधिक सजग है। नए दशक की लेखिकाओं में उशा प्रियवंदा,मृणाल पाण्डे,कृश्णा सोबती, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, मन्नू भंडारी,मैत्रेयी पुश्पा, नमिता सिंह आदि लेखिकाओं ने यथार्थ दीप स्थापित किए है इन लेखिकाओ में यथार्थ की छटपटाहट कहीं बूंद में,कहीं नदी के रुप में कहीं सागर के रुप में व्यक्त है। ये लेखिकाएँ समझ रही है कि अब नारी भोग्या नहीं है वह भी हाड मांस की बनी हुई एक सक्रिय प्राणी है वह भी पुरुश की तरह जीने की अधिकारिणी है। सड़ी गली परम्पराएं जीवन को दयनीय बना रही है। इसलिए ये अपने कथा साहित्य के माध्यम से सच्चाई व्यक्त करना चाहती

Please cite this Article as : *गिरधर लाल षर्मा*, *समकालीन महिला कहानीकारो की कहानियों में नारी चेतना* : **Indian Streams Research Journal (Aug. ; 2012)**

है।

जब परिवेश में बदलाव आता है तो उसके साथ ही साथ मूल्य चेतना में भी बदलाव आता है। यह सही है कि आजादी के बाद परिवर्तित स्थितियों ने नारी चेतना को अधिक उजागर किया है यही कारण है कि आज नारी अपने समय की जीवंत वास्तविकता है तथा वह अपने वजूद को महसूस करती है।

न्यायमूर्ति मित्र जी अनुसार– श्महिलाओ में चेतना जाग्रत होगी तभी नारी अपना श्स्वश पा सकेगी और साधिकार समाज मे सम्भावित जीवन जी सकेगी।श

बीसवीं सदी को महिला जागरुकता का युग कहा जाता है। महिलाओ को नारी अस्मिता और गरिमा के लिए उनमें चेतना का होना आवश्यक है और चेतना का मुख्य प्रयोजन ही यह है कि नारी के लिए सुखद भविश्य का निर्माण हो जो कि दुराग्रहो के बिना हो।

आज की नारी न तो पुरुश से आगे निकलना चाहती है और न पीछे घिसटना, बल्कि सही मायने में किसी की पत्नी,माँ,बहिन,बेटी बनकर जीना चाहती है तथा अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की रक्षा करना चाहती है। समकालीन महिला लेखन नारी के अस्मिता व स्वतंत्र अस्तित्व की खोज का लेखन है। उन्होने सदियों की चुप्पी को तोड़ा है। यह पुरानी रुढियों,रीति–रिवाजों को मानने के लिए विवश नहीं है। अपने निर्णय वह स्वयं लेती है– यानि कि एक बात थी मृणाल पाण्डे की स्त्री व्यक्तित्व की एक अलग पहचान बनाने वाली सफल स्त्रीवादी कहानी है आज की स्त्री पति–पत्नी संबंधो की एक साझा संस्कृति चाहती है जिसमें दोनो का समान योगदान हो। जब पुरुश उसे आज वस्तु बनाकर रखना चाहता है तब उसे यह असहाय होता है। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए वह पति को छोड़ भी सकती है।

श्उबारने वाले हाथश नमिता सिंह की एक ऐसी कहानी है जिसमे स्त्री अपनी शक्ति को पहचान कर परिवार को उबारने का निर्णय लेती है– नायिका चंदो ऐसा ही उदाहरण है। चंदो अपने जीवन का निर्णय स्वयं लेती है स्व की तलाश करने वाली है। चंदो को बिन्नी के परिवार के लोग और उसके छोटे भाई देख रहे थे चंदो ने छोटे भाईयों की निगाहो का तीखापन महसूस किया था और जैसे अचानक उसे कुछ याद आया तो अच्छा आन्टी जी मै जा रही हूँ, नमस्ते। ऐसा कहकर चंदो अपने घर चली जाती है। पर छोटे भाईयों और माँ के लिए वह न जाने का निर्णय लेती है। अपने परिवार के सुखो का त्याग करने वाली आदर्श बहन और बेटी का चित्रण इसमें हुआ है।

आज की नारी शिक्षा व स्वावलम्बन तथा पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से स्त्रियों मे बहुत बड़ा परिवर्तन आया है। स्त्री अपने व्यक्तित्व के प्रति सजग हुई है वह अपने रुप व देह के प्रति सतर्क रहने लगी है।

उशा प्रियवंदा की प्रतिध्वनियाँ में एक स्वतंत्र प्रकृति वाली अत्याधुनिक स्त्री का चित्रण किया है कहानी की वसु बंधनमुक्त होकर स्वतंत्र व स्वछन्द जीना चाहती है। वसु व्यवस्था के पाश से मुक्त एक स्वतंत्र और स्वनिर्मित जीवन दृश्टि से जीवनयापन करती है उसकी यह दृश्टि नारी स्वतंत्रता की चरम अभिव्यक्ति है।

लेखिका श्नमिता सिंहश की कहानी या श्देवी सर्व भूतेशुश में देवयानी के चरित्र के माध्यम से स्त्री जीवन की सही पहचान की गई है किन्तु जब उसके जीजा उसके भीतर के देवी तत्व को जगाते है तब वह अपनी रक्षा के लिए पति को स्वयं तलाक देकर अपनी जिन्दगी की राह चुनती है। जीजा ने देवयानी के नाम को देवी में बदल दिया था– उनका दिया हुआ नाम उसके अस्तित्व का जरुरी हिस्सा बन गया था।

देवयानी एक स्वतंत्र पहचान वाली स्त्री है पति से अलग होकर देवयानी घर आकर हंसते हुए कहती है– मै मुक्त हो गई दीदी, अम्मा। मै मुक्त हूँ अब पूर्ण मुक्त।

अपनी रक्षा के लिए वह पति का संबंध तोड़कर जीवन की नई राह चुनती है।

स्त्री की अस्मिता का एक मौजूदा सवाल है। आज वह मुक्त होकर स्वयं अपनी अस्मिता की पहचान करती है।

श्मन्नू भंडारीश की श्उचाँईश, मृदुला गर्ग की हरी बिन्दी आदि कहानियो में स्त्री जीवन के विविध पहलुओ का निरुपण करते हुए लेखिकाओ ने स्त्री के लिए नये रुपो और विचारो को एक अलग दृश्टिकोण से परखा है।

अब विवाहित स्त्री भी केवल पति की परिणिता बनकर नहीं रहना चाहती। वह एक स्वतंत्र व्यक्ति है। यह बात निरंतर उसकी सोच में है। इसी सोच के कारण विवाह के बाद अगर पति अपने कामो में व्यस्त रहता है या स्त्री की उपेक्षा करता है त बह अपने अभावो को भरने के लिए सही गलत की परवाह किए बिना अपनी मनचाही जिन्दगी व्यतीत करती है। राजी सेठ की कहानी 'ढलान' पर की चारु, मृदुला गर्ग की अदृश्य कहानी की वीणा आदि में स्पश्ट महसूस किया जा सकता है।

माँ बनना एक स्त्री के लिए बड़े ही गर्व की बात होती है। वह भी स्त्री का अधिकार है 'मन्नू भण्डारी की रानी माँ का चबूतरा कहानी की गुलाबी अपने शराबी पति को घर से निकाल देती है और मेहनत करके बच्चो को पालती है। वह किसी के आगे हाथ नहीं फैलाती गांव की अन्य औरतो की तरह रानी माँ के चबूतरे पर जाकर अपना दुखड़ा नहीं रोती। गुल्मनी को लोग चुडैल कर्कश व बुरी समझते है। लेकिन वह एक अच्छी औरत है बच्चे पालने के लिए मजदूरी करने वाली माँ है।

नारी चेतना को केन्द्र में रखकर इन लेखिकाओ द्वारा सर्जित साहित्य का प्रमुख सरोकार नारी का अपने पक्ष में खुद लड़ना और खुद खड़ा होना रहा है क्योकि जब तक यह लड़ाई अपनी ओर से नही लड़ी जाएगी नारी पक्ष में नहीं आएगी।

पिछले दो दशको से नारी चेतना को प्रस्तुत करने वाली उत्कृश्ट रचनाएँ सामने आ रही है। इन लेखिकाओ के लेखन के केन्द्र में नारी की भयावह समस्याएँ है, पितृसत्तात्मक मर्यादा की तीखी आलोचना है, जिसनें नारी का भरपूर खुला शोशण किया है। समकालीन गीतांजलि श्री चित्रा मुदगल, मैत्रेयी पुश्पा, नसिरा शर्मा, मृणाल पाण्डे आदि की लेखनी से नारी मुक्ति के लिए जो फीट बैक आ रही है। वह अवश्य ही नारी समाज की चेतना का विकास करेगी।

आज का युग प्रत्येक क्षेत्र में जागरण का युग है नारी आज वह नहीं रह गई, जो कि पचास वर्श पहले थी कालान्तर में उसके जीवन व्यवहार और सोचने में तौर तरीको में भारी अंतर आया है। नारी चेतना का अर्थ यह नहीं है कि उसे पारिवारिक बंधनो से मुक्त होना है और अपने दायित्वो से मुंह मोड़कर स्वच्छ जीवन बिताना है। अपितु उसे अपनी भावनाओ की अभिव्यक्ति के लिए पूर्ण रुप से जागरुक होना है। उसे रुढ़ियों परम्पराओ की गुलामी के लिए जोर जबरदस्ती न करनी पड़े,उसे अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए पुरुश की भांति सुविधा और अवसर प्राप्त हो,उसकी और मानवीय दृश्टि से देखा जाए पुरुश नारी के साथ आत्मीयता का छलावा कर अमानवीय व्यवहार करना अपना धर्म समझता चला आ रहा है किन्तु अब चेतना के स्वर बदले है और नारी ने अपने अस्तित्व के अर्थ को समझा है और इसने संकल्प लिया है कि सबको मानवता का अर्थ समझाना है।प्रकृति का नियम है,अन्याय के विरुद्व ही चेतना के स्वर मुखरित होते है व क्रान्ति का उदघोश होता है। नारी हमेशा से ही शांत रही, पुरुश ने उसको उत्पीड़ित किया, ग्रस्त किया,उपेक्षित किया परन्तु आज आवश्यकता है, नये संदर्भो में नारीत्व को नए सिरे से परिभाशित करने की पुनः स्थापित करने की नारीत्व जिसका अपना गौरव हो, अपना स्वाभिमान हो अपनी सार्थकता हो जिससे वह समाज में बराबरी की हकदार हो।

सन्दर्भ

1. स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, मृणाल पाण्डे, पृ. 14
2. समकालीन हिन्दी महिला कहानीकारो की कहानियो में नारी चेतना, डॉ. अर्चना शेखावत,पृ. 78
3. राश्ट्रीय महिला आयोग और भारतीय नारी, एम.ए अंसारी, पृ. 239

4. साठोतरी हिन्दी लेखिकाओ की कहानियों में नारी, डॉ. मंगल कप्पीकेरे, पृ149
5. जंगल गाथा : नमिता सिंह, पृ. 86
6. साठोतरी हिन्दी लेखिकाओ की कहानियो में नारी, डॉ. सां. मंगल कप्पीकेरे, पृ 151
7. नील गाय की आँखें, नमिता सिंह, पृ. 27
8. नील गाय की आँखे, नमिता सिंह, पृ. 40